(1)

Quit Indian Movement
भारत छोड़ो आंदोलन

Ashish Kumar Thakur
B.A.II, History(H), Paper-II
Dr. L.K.V.D. College, Tajpur
Samastipur.

क्रिप्स शिष्टमण्डल की असफलता से सभी को निराशा हुई। अभी तक कांग्रेस ने कोई ऐसा कार्य नहीं किया था, जिससे अंग्रेजों को परेशानी हो। परन्तु अब जबकि जापान लगभग देश के द्वार पर खड़ा था, कांग्रेस चुप नहीं रह सकती थी। गांधीजी ने अब अप्रैल 1942 ई० में अंग्रेजों की सुव्यवस्थित ढंग से भारत से चले जाने की बात कही। उनके अनुसार जो भी हो अब भारतीयों और अंग्रेजों की "कुशलता इसी में थी कि अंग्रेज भारत से चले जाएं। अब 'भारत छोड़ो' का नारा प्रसिद्ध हो गया। 10 May 1942 के 'हरिजन' में उन्होंने लिखा कि " भारत में अंग्रेजों की उपस्थिति जापानियों को भारत पर आक्रमण करने का निमन्त्रण है। उनके जाने से यह लोभ समाप्त हो जाएगा।' इसी प्रकार कुछ दिन पश्चात उन्होंने उसी पत्र में लिखा था कि - 'भारत को ईश्वर के हाथों में अथवा अराजकता में छोड़ दो।" तब सभी दल कुत्तों की भाँति लड़ेंगे और जब वास्तविक उत्तरदायित्व सिर पर पड़ेगा तो स्वयं वास्तविक समझौता कर लेंगे।

इसी प्रकार 14 जुलाई 1942 को कांग्रेस कार्यकारिणी ने अंग्रेजों को चले जाने का प्रस्ताव पारित किया और स्पष्ट कहा कि "यदि यह अपील स्वीकृत नहीं होती तो हम लोग महात्मा गांधी के नेतृत्व में देश में एक सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाने के लिए बाध्य हो जाएंगे।

8 Aug 1942 को बम्बई में हुए अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटि की बैठक में इस प्रस्ताव का समर्थन हुआ और यह कहा गया कि " भारत में अंग्रेजी राज्य की समाप्ति भारत और संयुक्त राष्ट्रों, दोनों के हित में है। इस राज्य का बने रहना भारत के लिए अपमानजनक है और उसे दिन प्रतिदिन क्षीण कर रहा है और इसे अपनी रक्षा के असमर्थ बनाता जा रहा है और संसार की स्वतंत्रता में भी योगदान देने में बाधा है।

Ashish

फलस्वरूप अगले दिन ही गाँधीजी और कांग्रेस कार्यकारिणी के सभी सदस्य बन्दी बना लिए गए और अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटि तथा प्रांतीय कांग्रेस कमिटियों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। परन्तु लोगों ने इसको चुपचाप स्वीकार नहीं किया। स्थान-स्थान पर सार्वजनिक माल, सम्पत्ति इत्यादि की हानि हुई। गोलियाँ चली। यदपि कांग्रेस के नेताओं ने इसके लिए कोई उत्तरदायी स्वीकार नहीं किया परन्तु यह मानना कठिन है कि वे पुर्णतया अनभिज्ञ थे अथवा उनकी अनुमति के बिना यह सब कुछ हुआ। सरकार ने भी दमन चक्र चलाया, सैकड़ो व्यक्ति मारे गए और हजारों जेल में डाले गए।

कांग्रेस नेता इस प्रकार जेलों में बंद थे तो दूसरी ओर जिन्नाह ने मुस्लिम लीग को 23 मार्च 1943 ई० को पाकिस्तान दिवस मनाने का आहवन किया। समस्त भारत के मुसलमानों को यह कहा कि पाकिस्तान ही मुसलमानों का राष्ट्रीय उद्देश्य है। मुस्लिम लीग ने भी 26 अप्रेल 1943 को इसका समर्थन किया।

1945 की वेवल योजना [The wavell plan] :-

Oct 1943 में लार्ड लिनलिथगो के स्थान पर लार्ड वेवेल भारत के गवर्नर जनरल नियुक्त हुए। उन्होंने गतिरोध को समाप्त करने का एक और प्रयत्न किया। मार्च 1945 में वह इंग्लैण्ड विचार विमर्श के लिए गए।

14 जून को उन्होंने अपने विचार-विमर्श के परिणामों से जनता को एक रेडियो प्रसारण द्वारा अवगत कराया। भारत राज्य सचिव लार्ड एमरी ने कामन्स सभा मे भी इसी प्रकार का वक्तव्य दिया और यह कहाँ कि मार्च 1942 का प्रस्ताव पूर्ण रूपेण फिर भी उपस्थित था।

उसने जब तक नया संविधान न बने वाइसराय की कार्यकारिणी के पुनर्गठन का प्रस्ताव किया। गवर्नर जनरल और मुख्य सेनापति के अतिरिक्त सभी सदस्य भारतीय राजनैतिक नेताओं में से लिए जायेंगे। उस परिषद में मुसलमान और स्वर्ण हिन्दू बराबर-बराबर हो होंगे।

कांग्रेस कार्यकारिणी के सदस्य जेल से छोड़ दिए जाएंगे और ज्योंही शिमला सम्मेलन के लिए निमन्त्रण दिए गए।

Ashish